Vol.12 Fabruary'19 No.7
Annual Subscription : Rs 100
Rs. 10/- per copy

# ब्रह्मार्पण
# BRAHMARPAN

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्

A Monthly publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

Brahmasha India Vedic Research Foundation
ब्रह्माशा इंडिया वैदिक रिसर्च फाउन्डेशन
C2A/58 Janakpuri, New Delhi - 110058

# स्वाधीनता के पर्व को ऐसे मनाएँ

*–दयाशंकर गोयल*

आज हम स्वाधीनता के पर्व को ऐसे मनाएँ।
राष्ट्र की आराधना को ध्येय जीवन का बनाएँ।।
भूमि को धारण किया जिन सप्त धारक शक्तियों ने।
राष्ट्र के हर निवासी में निरन्तर उनको बढ़ाएँ।।
सत्य, ऋत, तप, क्षात्रशक्ति, दीक्षा, यज्ञ, ब्रह्मशक्ति।
मिल सबल आधार सातों बनाते दृढ़ राष्ट्रशक्ति।।
जो दें स्थिरता, सुदृढ़ता राष्ट्र का उन्नयन लाएँ।
पूर्वजों ने इन्हें साधा, हम भविष्य हित सजाएँ।।
राष्ट्रवासी सदाचारी, सतव्रती, सत्यान्वेषी।
बनें, छोड़ें असत्, मिथ्याचार कदाचार, शेखी।।
'ऋतम्' से जीवन व प्रकृति के नियम का बोध लाएँ।
जिससे सारे संकटों से राष्ट्र को हरदम बचाएँ।।
तेज, बल, उत्साह, अद्भुत शौर्य, "उग्रम" – क्षात्रशक्ति।
से सुसज्जित, समुन्नत हो राष्ट्र की हर सैन्य पंक्ति।।
'दीक्षा' से राष्ट्रहित संकल्प लें, निष्ठा जगाएँ।
'तप' असह्य दुख राष्ट्र हित में मुस्कराते पल पाएँ।।
ज्ञान, प्रतिभा– "ब्रह्मशक्ति" से सजाएँ राष्ट्र सारा।
लोकहित में 'इदम् नमम' की यज्ञमयी हो भाव धारा।।
सभी जन स्वाधीनता के पर्व पर संकल्प लाएँ।
सप्त शक्तिमय, समुन्नत राष्ट्र को अपने बनाएँ।

*1154 डी., सुदामा नगर*
*इन्दौर–452009*

Brahmarpan February'19 Vol. 12 No.7
माघ–फाल्गुन 2075 वि.संवत्

# ब्रह्मार्पण
# BRAHMARPAN

A bilingual Publication of Brahmasha India Vedic Research Foundation

**BRAHMASHA INDIA VEDIC RESEARCH FOUNDATION**

C2A/58, Janakpuri,
New Delhi-110058
Tel :- 25525128, 9313749812
*email:*deeukhal@yahoo.co.uk
brahmasha@gmail.com
Website : www.thearyasamaj.org
of Delhi Arya Pratinidhi Sabha

Sh. B.D. Ukhul
*Secretary*
Dr. B.B. Vidyalankar 0124-4948597
*President*
Col.(Dr.) Dalmir Singh (Retd.)
*V.President*
Dr. Mahendra Gupta *V.President*
Ms. Deepti Malhotra
*Treasurer*
**Editorial Board**
Dr. Bharat Bhushan Vidyalankar, Editor
Dr. Harish Chandra
Dr. Mahendra Gupta
Shri Shiv Kumar Madan

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

***Printed & Published by***
B.D. Ukhul for Brahmasha India Vedic Research Foundation
Under D.C.P.
License No. F2 (B-39) Press/2007
R.N.I. Reg. No. DELBIL/2007/22062
**Price : Rs. 10.00 per copy**
**Annual Subscription : Rs. 100.00**

## *CONTENTS*

1. स्वाधीनता के पर्व को ऐसे मनाएँ
*–दयाशंकर गोयल* 2
2. संपादकीय 4
3. भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व 8
*–डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार*
4. भगवद्गीता और स्वामी दयानन्द 16
*–भाई परमानन्द*
5. कालीबंगा ऋग्वेद के समय की सभ्यता 19
6 कश्मीर समस्या सीमा की नहीं, सम्प्रदाय की है 23
7. जब पदम् श्री मीराबाई चानू ने देश का गौरव बढ़ाया 27
8. पूर्वोत्तर के छह राज्यों में अब हिन्दू हो गए अल्पसंख्यक 32
*–शरद गुप्ता*
9. Legend of Guru Nanak 34
*-Reena Singh*

## संपादकीय

# ईसाइयत और इस्लाम का विस्तारवादी स्वरूप

*-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार*

आज ईसाइयत और इस्लाम विस्तारवादी दृष्टिकोण रखते हैं किन्तु इनके विस्तार की पद्धति में बहुत अन्तर है। इस्लाम विचार को बलात् दूसरे पर थोपता है, उसका पूरा इतिहास खूनी संघर्ष का रहा है। ईसाइयत ने भी अपने विचारों को फैलाने में अत्याचार कम नहीं किये हैं परन्तु उसके मन में सभ्य दिखाने की इच्छा है, वे अपने विचारों को आप पर थोपते हैं परन्तु सेवा के नाम पर, आपको शिष्ट-शिक्षित बनाने के नाम पर जबकि इस्लाम को इस बात की परवाह नहीं कि आप उसे क्या समझते हैं, उसे अपने उद्देश्य को पूरा करने का जुनून है।

कुछ साल पहले रोम से पोप भारत आये थे, उन्होंने अपने इरादे स्पष्ट रूप से बताये थे, हमारे लोग उसे न समझ पायें या न समझना चाहें यह अलग बात है। पोप इस देश को एक शब्द दे गए थे मिलेनियम-सहस्राब्दि, हमने शब्द तो ले लिया, इसका प्रयोग भी करने लगे परन्तु पोप के आशय को हृदयङ्गम नहीं कर सके। पोप ने कहा था चर्च ने पिछली सहस्राब्दि अमेरिका और यूरोप को ईसाई बनाने में लगाई थी और अगली सहस्राब्दि हमें एशिया को ईसाई बनाने में लगानी है। यह दिन-मास-वर्ष-शताब्दी-सहस्राब्दि सब ईसाइयत के विस्तार का गणित है। इसमें ईसाइयत का विस्तार नया है जबकि भारतीय कालगणना का आरम्भ क्योंकि सृष्टि के आरम्भ से है, उसमें नवीनता स्वाभाविक है क्योंकि प्रकृति की नवीनता से वह जुड़ा है। आजकल हर पढ़ा-लिखा आदमी शिष्ट बनकर अपने दिन, पक्ष, मास, वर्ष, शताब्दी सब कुछ भूल

जाता है। अपने अंक, अपने अक्षर, अपनी भाषा भी भूल जाता है। अपने वेश, इतिहास भी उसे भूलना पड़ता है। यह सब सभ्य और शिक्षित होने का दण्ड है, इतना सब कुछ भूले बिना हम शिक्षित नहीं बन पाते। परन्तु यह भी पर्याप्त नहीं है। ईसाई बनने के लिए ये सब भूलना तो ठीक है। परन्तु कुछ और भी भूलना होगा। पहले ईसाई प्रचारक छद्म रूप से धार्मिक आस्था पर आक्रमण करते थे। स्कूलों में बच्चों को, ग्रामों में अशिक्षितों को वह सिखाते थे, राम-कृष्ण की लोहे की मूर्ति लेते और ईसा की लकड़ी की मूर्ति, दोनों रंग-रूप में एक जैसी लगती थीं, सबके सामने उन्हें पानी में डालते और कहते थे जो झूठा है वो डूब जायेगा जो सच्चा है तैरता रहेगा। जब अग्नि में मूर्ति डालते तो ईसा की मूर्ति लोहे की लेते और राम-कृष्ण, देवी-देवताओं की लकड़ी की मूर्ति, उन्हें आग में डालते, झूठा जल जायेगा-सच्चा बच जायेगा। ये बातें सब पुरानी हो गई, अब तो वे दुःसाहस करने लगे हैं, उन्हें लगता है भारतीय हिन्दू समाज में समझ तो है ही नहीं, अब उन्हें लगता है इनमें आत्म-सम्मान भी नहीं बचा है। पहले तो ईसाई लोग अपनी अलग पहचान, अलग नाम रखते थे परन्तु अब इस समाज में घुल-मिलने के लिए इन अनिवार्यताओं को हटा दिया है। इनके प्रचारक पादरी तथा नन्स गेरुवा कपड़ा धारण करते हैं, चर्च को मंदिर और ईसा को देवता के रूप में पुजवाने लगे हैं, बाईबिल को संहिता कहते हैं। आज कौन कह सकता है कि आंध्र का मुख्यमंत्री राजशेखर रेड्डी ईसाई है। किसको पता लगता है कि टी. नारायण राव ईसाई हैं, इसीलिए उन पर सोनिया गाँधी की कृपा प्राप्त हुई है। आज भारत सरकार के महत्त्वपूर्ण पद ईसाइयों के पास हैं, किसको लगता है कि सोनिया गाँधी या राहुल गाँधी ईसाई हैं। परन्तु सत्ता की पकड़ ईसाइयत के हाथ में जा रही है। ईसाइयत और इस्लाम दोनों के लिए इस देश का हिन्दू

समाज समानरूप से अवाञ्छनीय है। ईसाई लोग अपने काम को समाज सुधार और सेवा का आवरण देते हैं। परन्तु अपने उद्देश्य के लिए कोई भी हथकण्डा अपनाने से नहीं चूकते। सेवा और शिक्षा के माध्यम से बहुत बड़े वर्ग पर इनका प्रभाव है। शिक्षा के माध्यम से इन्होंने समाज के सभ्य संभ्रान्त और मध्यवर्ग पर अपनी पकड़ मजबूत की है तो सेवा के नाम पर गरीब, वनवासी लोगों में अपनी पैठ बनाई है, इन्होंने शिक्षा के नाम पर बहुत काम किया है परन्तु इसका उद्देश्य सेवा या शिक्षा नहीं है। सेवा अकारण, बिना स्वार्थ के पीड़ित की सहायता या सहयोग करने का नाम है परन्तु ईसाइयों की सेवा ईमान के बदले किया गया कार्य है यह सेवा तो किसी प्रकार से नहीं है अपितु शुद्ध सौदा है जो व्यक्ति के ईमान के, धर्म के, आस्था के बदले किया गया है। इसी प्रकार शिक्षा भी ईसाइयत के प्रचार का साधन है इसमें ईसाई संस्थानों में शिक्षित भले ही ईसाई न बनें परन्तु वे उनके प्रति सद्भाव रखते हैं, इनका समय पड़ने पर खूब सहयोग करते हैं। इसी विस्तार बल पर ये लोग अपनी संस्थाओं के माध्यम से हिन्दू मनों में अपने धर्म के प्रति हीन व कुत्सित भाव पैदा करने की कोशिश खुलेआम कर रहे हैं। इसका ताजा उदाहरण ईसाइयों द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'हकीकत' है। इस पुस्तक में सभी देवी-देवताओं को तिरस्कृत और अपमानित करने का प्रयास किया गया है। ऐसा नहीं है कि किसी मत मतान्तर में कोई दोष नहीं है। जितना पाखण्ड, मिथ्याचार हिन्दुओं में है उससे कम पाखण्ड ईसाइयत में नहीं है। परन्तु लेखक दुराग्रह और दुर्भावना ग्रस्त है। अतः इसे यह सुधार कार्य या सत्य के प्रकाशन का प्रयास नहीं कहा जा सकता। इस आधार पर अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के अन्तर्गत भी इसे नहीं रखा जा सकता। इस पुस्तक में राम-कृष्ण, पाण्डव, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, आर्यसमाज, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एवं

अन्य संगठनों की मान्यताओं पर अश्लील भाषा में मिथ्या आरोप लगाये गये हैं। पुस्तक राजस्थान सरकार ने प्रतिबन्धित कर दी है। परन्तु केवल प्रतिबन्धित करना समस्या का हल नहीं है। इस मानसिकता और इसके पीछे जो कारण है उनकी भी जाँच-पड़ताल आवश्यक है।

पुस्तक इस के स्वरूप, उद्देश्य और लेखक की मानसिकता को उजागर करती है। इस पुस्तक के लेखक का नाम एम.जी. मैथ्यू है जो पेराम्बूर केरल का निवासी है। एम.ए. थॉमस जो इमान्यूअर स्कूल कोटा चलाते हैं वे इस पुस्तक के प्रचारक हैं और उनके पास से ये पुस्तकें पकड़ी गई हैं। इनके द्वारा अनेक स्कूल और अनाथालय चलाये जा रहे हैं, इस देश का दुर्भाग्य देखिए, ये व्यक्ति भारत सरकार से सम्मानित हैं। इससे इन संस्थाओं के चलाने का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है। उदित राज जैसे तुष्टिकरण में लगे लोग इस व्यवहार पर अंकुश लगाने को अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न कहते हैं। वे भारत की बहुसंख्यक जनता के विरोधी और प्रजातंत्र के लिए घातक हैं। ईसाई देशों से करोड़ों रुपये की सहायता ऐसे लोगों को मिल रही है, स्वार्थी सत्ता लोलुप लोग इनको संरक्षण प्रदान करते हैं इसीलिए दिन प्रतिदिन इनका दुस्साहस बढ़ रहा है।

इस आचरण की जितनी निन्दा की जाए कम है। इन पर न्यायालय में मुकदमा चलाकर दण्ड दिया जाना चाहिए। क्योंकि दण्ड के बिना अपराध नहीं रुकते, ये लोग समय-समय पर ऐसे प्रयोग हिन्दू समाज की सहनशक्ति की परख के लिए करते रहते हैं-

**दण्डः शास्ति प्रजा सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।**
**दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः।।**

# भारतीय संस्कृति के मूलतत्त्व

*-डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार*

हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों के आधार पर मानवजीवन को सुसंस्कृत करने के लिए जन्म से मृत्यु पर्यन्त सोलह संस्कारों का विधान किया। इन संस्कारों से मनुष्य का अभ्युदय होता है। इन्हीं से मनुष्य और पशु में अंतर किया जाता है। मनुष्य बचपन से वृद्धावस्था तक निरंतर स्वयं को सुसंस्कृत करता जाता है। इसमें संदेह नहीं कि प्रत्येक देश, जाति और समाज के लोगों का अपना-अपना जीने का ढंग होता है परन्तु उसमें भी एक ऐसा तत्त्व है जो सब में समान होता है। प्रत्येक व्यक्ति में परस्पर जो सहानुभूति और मैत्रीभावना होती है वह उसकी संस्कृति के कारण है। प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जिसकी वह दूसरों से अपेक्षा करता है। आइए, अब हम उन मूल तत्त्वों पर विचार करें जो हमारी संस्कृति के आधार हैं। भारतीय संस्कृति का आधार वेदों, उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, षड्दर्शनों और गीता आदि को कहा जा सकता है। वैदिक धर्म एक सार्वभौम, पंथनिरपेक्ष, सेक्युलर धर्म है। यह धर्म किसी व्यक्ति, समुदाय से संबंधित नहीं है। इसमें विश्वबंधुत्व पर बल दिया गया है। धर्म, सम्प्रदाय, मजहब या रिलीजन में अंतर है। धर्म व्यक्तियों द्वारा प्रवर्तित है जबकि वैदिक धर्म ईश्वर प्रदत्त है और वह मानव मात्र के लिए है।

वस्तुतः धर्म उसे कहते हैं जिसे जीवन में धारण किया जाए। "धारणात् धर्म उच्यते"। मनुस्मृति 6/92 में धर्म का लक्षण दिया है- **"धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्"**। अर्थात् साहस, दूसरों के प्रति क्षमाभाव, चोरी न करना, शारीरिक और मानसिक शुद्धता, आत्मसंयम, सुबुद्धि, उत्तम ज्ञान, सच बोलना, किसी पर क्रोध न करना ये दस धर्म के लक्षण हैं।

इन लक्षणों को सभी धर्म समान रूप से स्वीकार करते हैं। इनसे किसी का कोई विरोध नहीं है। अपने जीवन में इन गुणों को उतार कर, इन पर आचरण करके मनुष्य अपनी आत्मा का उत्थान कर सकता है। इसी प्रकार धर्म का एक अन्य लक्षण है-

यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।।

**1. भारतीय संस्कृति का प्रथम तत्त्व है : ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास**

क. सबसे प्रथम ईशोपनिषद् में कहा है कि **"ईशावास्यमिदं सर्वम्"** अर्थात् ईश्वर संसार के कण-कण में व्याप्त है। इसीलिए मनुष्य को उसके अस्तित्व में विश्वास कर निष्काम भाव से, बिना लालच के संसार के पदार्थों का भोग करना चाहिए क्योंकि संसार के ये सब पदार्थ ईश्वर प्रदत्त हैं।

ख. **परमात्मा एक है** जिसे ज्ञानी लोग भिन्न-भिन्न नामों से जानते हैं। कोई उसे यम, कोई अग्नि और कोई वायु कहता है। उसके अनेक नाम हैं। वेद में कहा भी है- **एकं सद्‌प्रिया बहुधा वदन्ति। अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।**

ग. **ईश्वर का स्वरूप क्या है?** ईश्वर चेतन है, सत् चित् और आनंदस्वरूप है। वह निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनंत, निर्विकार, अनादि और अनुपम है। वह सर्वाधार, सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी है। वह अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।

घ. **वह निराकार है** अर्थात् **उसकी कोई प्रतिमा या मूर्ति नहीं है।** यजुर्वेद (32.3) में कहा है- **न तस्य प्रतिमाऽस्ति यस्य नाम महद्‌यशः।।**

इससे सिद्ध होता है कि वेदों में मूर्तिपूजा का विधान नहीं है क्योंकि उसकी मूर्ति ही नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश कोई देवता नहीं है जिनकी मूर्तियों की पूजा की जाती है। परमात्मा के उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय आदि गुणों के कारण उसे ब्रह्मा, विष्णु और महेश आदि नामों से पुकारा जाता है।

ङ. **ईश्वर संसार का निमित्त कारण है।** उसने उपादान कारण प्रकृति से जैसे कुम्हार मिट्‌टी से घड़े का निर्माण करता है वैसे ही इस जगत् का निर्माण किया। परमात्मा चेतन है क्योंकि निमित्त कारण हमेशा चेतन ही होता है जिस प्रकार घड़े का निर्माता कुम्हार चेतन है।

च. **ब्रह्मांड की नियम-व्यवस्था और सुसंगति के पीछे उसका हाथ है।** वह हमारे सब क्रियाकलापों को देखता है और हमारे मन में उठने वाले

सभी विचारों को जानता है। ईश्वर के प्रति पूर्ण विश्वास और उसके प्रति श्रद्धा के कारण हमारा हृदय पवित्र रहता है। वह हमें सभी चिंताओं और भय से मुक्ति प्रदान करता है। ईश्वर के अस्तित्व को आधुनिक मूर्धन्य विद्वानों ने भी स्वीकार किया है। इस विषय में कुछ प्रमुख वैज्ञानिकों के मत यहाँ प्रस्तुत किए गए हैं।

1. सापेक्षता के सिद्धांत के प्रतिपादक आइन्सटाइन का मत है-

I believe in God who reveals Himself in the orderly harmony of universe. I believe that intelligence is manifested through the nature. The basis of all scientific work is conviction that the world is an ordered and comprehensive entity and not a thing of chance.

अर्थात् मुझे ईश्वर की सत्ता में विश्वास है। उसका अस्तित्व ब्रह्मांड में व्याप्त नियम-व्यवस्था और समरसता में दिखाई पड़ता है। उसकी प्रतिभा की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से होती है। इस विश्वास का आधार वह वैज्ञानिक चिंतन है जिसके अनुसार ब्रह्मांड एक समग्र और सुव्यवस्थित रचना है न कि एक आकस्मिक घटना-

2. आधुनिक विज्ञान के जनक न्यूटन के अनुसार-

This material world is the handiwork of the omniscient and omnipresent creator of all things, most wise, most just and most holy.

अर्थात् यह भौतिक जगत् सर्वज्ञ और सर्वव्यापक ईश्वर की सृष्टि है। वह ईश्वर सबसे बुद्धिमान्, न्यायकारी और सबसे पवित्र है।

3. इंग्लैण्ड के प्रोफेसर फ्लेमिंग के मत में-

The scientific study most certainty shows us the presence in the physical universe of an order, stability, directive power and intelligibility.The qualities are not spontaneously produced. They do not come by chance. This universe is not just a thing, it is a thought and thought implies a thinker. Thinker of intelligence of which our intelligence is but a faint copy.

इस प्रकार हम ब्रह्मांड में इतनी नियमव्यवस्था, संगति और समरसता देखते हैं जिससे हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि इसके पीछे किसी सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान शक्ति का हाथ है जिसे हम ईश्वर, गॉड या किसी

अन्य नाम से पुकार सकते हैं।

2. **भारतीय संस्कृति का द्वितीय तत्त्व है : आत्मा की अमरता में विश्वास।**

जीवात्मा सत्-चित् स्वरूप है अर्थात् उसकी सत्ता है और वह चेतन है। जीवात्मा ज्ञानवान् है और वे अनेक हैं। जहाँ परमात्मा एक, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है वहाँ जीवात्माएँ अनेक, अल्पज्ञ और अल्पशक्ति हैं। साथ ही वे एक-देशीय, परिणामी और परिछिन्न (सीमित) हैं। ईश्वर और जीवात्मा दोनों ही अनादि, अनन्त और अविनाशी हैं।

आत्मा कार्य करने में स्वतन्त्र है, परन्तु फल भोगने में परतंत्र है और ईश्वर के अधीन है। गीता में कहा है- **"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्"**। जीवात्मा (मनुष्य) शरीर धारण कर योग द्वारा इंद्रियों पर नियंत्रण स्थापित कर मोक्ष प्राप्त कर सकता है अन्यथा वह विषयों में लिप्त होकर जन्म-मरण के चक्र में पड़ा रहेगा। आत्मा के भोग और अपवर्ग के लिए ही प्रकृति का सृजन हुआ है।

वेद, उपनिषद् और गीता में इस बात का उल्लेख है कि आत्मा शरीर में स्थित है। शरीर का नाश हो जाता है किन्तु आत्मा अमर है। उसका नाश नहीं होता। गीता (2/20) में कहा है- **अजोनित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।**

अर्थात् आत्मा न कभी पैदा होती है, न मरती है। वह नित्य है, सदा रहने वाली है। इस शरीर की बचपन, यौवन, बुढ़ापा आदि विभिन्न अवस्थाओं का आत्मा से कोई संबंध नहीं। जिस प्रकार हम नए वस्त्र धारण करते हैं। धीरे-धीरे वे पुराने और जीर्ण-शीर्ण हो जाते हैं तब हम उन्हें उतार फैंकते हैं, उसी प्रकार आत्मा भी पुराने जराजीर्ण शरीरों को छोड़कर नए शरीर धारण करता है। यही जीवन में जन्म-मरण का चक्र है।

जब मनुष्य को यह ज्ञान हो जाता है कि शरीर तो मरण धर्मा है इसके साथ लगाव और मोह-ममता कैसी? आत्मा तो अजर, अमर, अविनाशी है। तब वह मृत्यु से नहीं डरता।

आत्मा और शरीर के संबंध को कुछ इस प्रकार समझा जा सकता है। प्रकृति इस शरीर का और भौतिक जगत् का उपादान कारण है। प्रकृति भी अनादि और अनंत एवं अविनाशी है। मुंडक उपनिषद में

शरीर की रथ से तुलना की गई है और आत्मा को इस रथ का स्वामी कहा है। इस रथ का सारथी बुद्धि है और इसे मनरूपी लगाम से नियंत्रित किया जाता है। कठोपनिषद् (3/3) का श्लोक है–

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।

बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।

3. **भारतीय संस्कृति का तृतीय तत्त्व है : कर्म सिद्धान्त और पुनर्जन्म में विश्वास।**

इसका अभिप्राय यह है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है परन्तु फल भोगने में वह परतंत्र है। वह जैसा कर्म करेगा उसे वैसा ही फल मिलेगा। अच्छे कर्मों के अच्छे और बुरे कर्मों के बुरे फल मिलते हैं। इसीलिए गीता (2/47) में कहा है–

**कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।**

**मा कर्मफल हेतुर्भू मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।**

अर्थात् हे मनुष्य तू कर्म कर, फल की चिंता न कर। इसका अभिप्राय यह भी नहीं कि तू कर्म करना ही छोड़ दे। बिना कर्म किए तेरा जीवन भी संभव नहीं। प्रकृति के गुणों से बाधित होकर **तुझे कर्म तो करना ही होगा। ईशोपनिषद् (1/2) में कहा है–**

**"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत् शतं समाः।"**

अर्थात् हे मनुष्य! तू सत्कर्म करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर। परमात्मा न्यायकारी है। वह मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार ही फल देता है।

हमारे समाज में भी ऐसी ही व्यवस्था है। यदि कोई व्यक्ति अपराध करता है तो सरकार उसे अपराध की गंभीरता के अनुसार ही कारावास या मृत्युदंड देती है। इसी प्रकार परमात्मा भी व्यक्ति के जीवन-भर में किए हुए कर्मों के अनुसार अगला जन्म देता है। इस प्रकार कर्म के सिद्धांत से ही पुनर्जन्म का सिद्धांत भी जुड़ा हुआ है। इसीलिए कहा है–

"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।।" अर्थात् हमें अपने द्वारा किए हुए अच्छे-बुरे कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है।

मनुष्य एक जन्म में वेदों और सृष्टि के बारे में सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त नही कर सकता। इसके बिना मनुष्य के जीवन में पूर्णता

नहीं आ सकती। इस ब्रह्मांड में ज्ञान का अनंत भंडार है। वेदों में आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान भरा पड़ा है। एक जन्म में इसे आत्मसात् करना संभव नहीं। जन्म-जन्मांतरों के संचित ज्ञान से उसमें पूर्णता आती है। आत्मा अमर है। उसे एक जन्म में किए हुए कर्मों के अनुसार अगला जन्म प्राप्त होता है। इसका अभिप्राय यह है कि हमारे द्वारा स्वयं ही भावी जीवन निर्धारित होता है। इसके अतिरिक्त यदि हमें कर्म के सिद्धांत पर विश्वास हो तो हम पाप के मार्ग पर चलने से बच सकते हैं। इस धारणा में लेशमात्र भी सच्चाई नहीं है कि पवित्र नदियों में स्नान से या धार्मिक स्थलों के दर्शन से पापों से मुक्ति मिल सकती है। इसका परिणाम तो और भी बुरा हो सकता है कि व्यक्ति नदियों के जल में पापों को धोकर और अधिक पापाचार करने की ओर प्रवृत्त होगा।

पूर्वजन्म की स्मृतियाँ भी इसी तथ्य की ओर संकेत करती हैं। भारत में तथा बहुत-से अन्य देशों में ऐसे व्यक्ति पैदा हुए हैं जिन्हें पूर्वजन्म के घर, गली-मोहल्लों आदि के बारे में ज्ञान है। इससे यही अनुमान होता है कि पुनर्जन्म होता है। यह प्रभु की असीम कृपा और न्याय है कि हमें पूर्वजन्म की अच्छी और बुरी स्मृतियाँ याद नहीं रहतीं। यदि ऐसा न होता तो हमारा जीवन दुःखों से भर जाता और परमात्मा न्यायकारी न रहता।

4. **भारतीय संस्कृति की चौथी विशेषता है : सार्वभौम प्रेम और मैत्रीभाव।**

वेदों में प्राणिमात्र के प्रति मैत्री भाव का संदेश दिया गया है। यजु. 36/18 में कहा है- **"मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।"** अर्थात् मैं संसार के सब प्राणियों से मित्रता का व्यवहार करूँ। किसी के प्रति भी द्वेष-भाव न रखूँ। जन्म से सब समान होते हैं। शास्त्र में कहा है- जन्म से सभी शूद्र होते हैं। बाद में जैसे-जैसे उनके संस्कार होते हैं उन्हें वैसा-वैसा वर्ण मिलता है। मनुस्मृति में कहा है- **"जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद्द्विज उच्यते।"** इसलिए जाति, वर्ण, धर्म और कुल से कोई ऊँचा-नीचा नहीं होता। जात-पाँत, छूआछूत आदि भेद मनुष्य के बनाए हुए हैं। व्यक्ति के वर्ण का निर्धारण आचार्य द्वारा शिष्य के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार किया जाना

चाहिए। जिसकी रुचि अध्ययन-अध्यापन में हो उसे ब्राह्मण, जिसकी रुचि राष्ट्र की रक्षा या शस्त्रास्त्र विद्या में हो उसे क्षत्रिय, जो कृषि, वाणिज्य-व्यापार करना चाहता हो उसे वैश्य और जिस व्यक्ति की बुद्धि किसी भी कार्य में न चले उसे शूद्र कहा जाता था। उसका कार्य समाज के तीनों वर्णों की सेवा द्वारा जीविका अर्जित करना होता था। हमारे समाज में इसके उदाहरण मिलते हैं। विश्वामित्र जन्म से क्षत्रिय थे। आध्यात्मिक रुचि को देखते हुए ऋषि वसिष्ठ ने उन्हें ब्रह्मर्षि की पदवी प्रदान की। आज के युग में दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी के सामाजिक कार्यों के कारण स्वामी श्रद्धानंद जी ने उन्हें महात्मा की पदवी से विभूषित किया।

हमें प्राणिमात्र को अपना मित्र समझना चाहिए। हमारे हृदयों से दीन-दुःखियों के लिए स्नेह की धारा प्रवाहित होनी चाहिए। हमें दूसरों के प्रति वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसी हमें उनसे अपेक्षा हो। महर्षि व्यास जी ने कहा है-

**श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।**
**आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।**

इसे धर्म का सार कहा है। इसके साथ ही वेदों का उपदेश है कि हमें सबके साथ मिलकर चलना चाहिए। परस्पर स्नेहपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। हमारे विचार एक समान होने चाहिए। ऋग्वेद का मंत्र है-**संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।।** (10.162.2) इस प्रकार हम जीवन में प्रसन्नतापूर्वक प्यार से मिलकर रहें। कोई किसी से द्वेष न करे। इससे बढ़कर आनंद की बात क्या हो सकती है?

5. **भारतीय संस्कृति का पाँचवाँ तत्त्व है : प्राणिमात्र की सेवा और आत्मत्याग की भावना।**

ईश उपनिषद् के पहले ही मंत्र में कहा है **"तेन त्यक्तेन भुंजीथा"** अर्थात् मनुष्यों! तुम प्रकृति प्रदत्त पदार्थों का त्यागपूर्वक उपभोग करो। प्रकृति ने मनुष्य को भोग और अपवर्ग की सामग्री प्रदान की है। यदि वह विषयों का त्याग कर निष्काम भाव से उनका साधन के रूप में उपयोग करेगा तो उसे निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष भी प्राप्त हो सकता है। इसी दृष्टि से वेदों में यज्ञ को सबसे उत्तम कर्म कहा है- **"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म"**। यज्ञ का अर्थ है- देवपूजा, संगतिकरण और दान। यज्ञ

के द्वारा हमें प्रभु भक्ति, विद्वज्जनों अर्थात् माता-पिता, आचार्य और अतिथियों की सेवा तथा समाज में सामंजस्य और समरसता पैदा करके सुख और शांति की स्थापना करनी चाहिए। जिस समाज में हम जीवन-भर कुछ-न-कुछ ग्रहण करते रहते हैं, उसके प्रति हम अपने कर्त्तव्य की पूर्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान देकर कर सकते हैं, हमें समाज को विद्या, धन, श्रम आदि का दान देकर उनकी सेवा करनी चाहिए। हमें केवल अपना पेट ही नहीं भरना चाहिए अपितु अपने समाज के अभावग्रस्त लोगों की भी चिंता करनी चाहिए। ऋग्वेद में कहा है "केवलाघो भवति केवलादी" अर्थात् जो अकेला खाता है वह पाप का भागी होता है। इसी बात को गीता में निम्नलिखित शब्दों में कहा है - भुंजते ते त्वद्यं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्। (गीता 3. 43) अर्थात् जो मनुष्य केवल अपना पेट भरने के लिए खाना पकाते हैं वे पापों को भोगते हैं। हमें अपने मन में सबके सुख की कामना करनी चाहिए ताकि हम और हमारे आसपास के सभी लोग सुखी हों, कोई दुःखी न हो और सर्वत्र कल्याण की वर्षा हो, कहा भी है-

**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः।**
**सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।**

मानव का अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है। इसके लिए योग साधना द्वारा इंद्रियों की वृत्तियों को विषयों की ओर से रोककर उन्हें अन्तर्मुखी करने की आवश्यकता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए हमें ब्रह्म को लक्ष्य बनाकर अपना ध्यान उसमें केन्द्रित करना होगा। मुंडक उपनिषद् (2/4) में कहा है-

**प्रणवो धनुः शरोह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।**
**अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत् तन्मयो भवेत्।।**

अर्थात् ओंकार को धनुष बनाकर, आत्मा को बाण का रूप देकर एकाग्र मन से ब्रह्म रूपी लक्ष्य को वेधना चाहिए। तभी ब्रह्म की प्राप्ति हो सकती है।

हमें भारतीय संस्कृति के इन मूलभूत तत्त्वों को हृदय में बैठा लेना चाहिए और इनके अनुसार आचरण करना चाहिए, तभी जीवन अनुकरणीय बन सकता है।

# भगवद्गीता और स्वामी दयानन्द

*–भाई परमानन्द*

आधुनिक भारत के एक बड़े विद्वान् स्वामी दयानन्द ने भगवद्गीता को विशेष महत्व नहीं दिया। विचार करने पर मालूम होता है कि उनके ऐसा न करने के खास कारण हैं। उनके जीवन में एक ही भाव काम करता था– वह था वैदिक धर्म की रक्षा। स्वामी दयानन्द को वेदों से इतना प्रेम था कि कोई अन्य चीज उन्हें इसके रास्ते में बाधक मालूम देती तो वे उसे अलग कर देते। दूसरे हर युग में हिन्दू आचार्यों ने भगवतद्गीता का आश्रय लेकर अपने–अपने विचारों का प्रचार करने का प्रयत्न किया है। इन्हीं मत–मतान्तरों के झगड़े के समय 'नवीन वेदान्त' की नींव पड़ी। प्रकट रूप से भगवद्गीता भी नवीन वेदान्त को सहायता देती मालूम होती है। स्वामी दयानन्द इन मत–मतान्तरों और नवीन वेदान्त की शिक्षा को जाति के धार्मिक एवं नैतिक पतन के लिए उत्तरदायी समझते थे। इस कारण उन्होंने भगवद्गीता की भी उपेक्षा की।

### भगवद्गीता और वेद

वेद के बारे में भगवद्गीता के विचार परस्पर विरोधी–से मालूम देते हैं। कई स्थलों पर, उदाहरणार्थ अध्याय 3 के श्लोक 15 में भी, वेद को ब्रह्म और ब्रह्म से ही पैदा हुआ बतलाया गया है। लेकिन अध्याय 2 के श्लोक 42, 45, 46, 53 आदि में वेद को पीछे छोड़कर आगे जाने की शिक्षा दी गई है। इस प्रकट विरोध का दूर होना तभी सम्भव है जब हम यह समझ लें कि महाभारत के काल से पहले ही वेद–शब्द के प्रयोग में भिन्नता आ गई थी। उस समय न केवल संहिता को ही वेद कहा जाता था बल्कि ब्राह्मणग्रन्थों, सूत्र ग्रन्थों आदि के लिये भी वेद शब्द प्रयुक्त किया जाता था। इन ग्रन्थों में विशेष रीतियाँ पूरी करके उनसे विशेष फल प्राप्त करने पर जोर दिया गया है। भगवद्गीता के दूसरे अध्याय में इनको ही वैदिक विधियाँ कहकर इनके कर्मकाण्ड को निचला दर्जा दिया गया है।

### भगवद्गीता की विशेषता

स्वामी दयानन्द ने वैदिक धर्म की नींव केवल 'संहिता' पर रखी है। 'संहिता या वेद' को आर्य ऋषि आरम्भ से ही स्वतः प्रमाण और भ्रान्ति–रहित मानते चले आये हैं। स्वामी दयानन्द ने इस कारण वेद–धर्म की रक्षा के लिए फिर उन्हीं का आश्रय लिया। इस सिद्धान्त

की सत्यता एवं स्वामी दयानन्द के उद्देश्य की पवित्रता में कोई सन्देह नहीं हो सकता। फिर भी अब ऐसा समय मालूम होता है कि यह प्रश्न उठाया जाए कि संहिता या वेद वैदिक धर्म के बचाव एवं प्रसार के लिए वह काम कर सकते हैं जो अन्य मजहबों के ग्रन्थ क्रियात्मक रूप से उनके लिए कर रहे हैं। यदि कोई चाहे कि एक पुस्तक स्थायी धार्मिक जीवन उत्पन्न करे तो इसके लिए पुस्तक की सच्चाई काफी नहीं है बल्कि हर एक मनुष्य के लिए उसका अध्ययन करना आवश्यक है। वेदों की भाषा बहुत कठिन है। उनकी व्याख्याएँ भी शायद उतनी ही कठिन हैं। अभी तक वेदों का कोई ऐसा प्रामाणिक अनुवाद नहीं हुआ जो जनसाधारण के हाथ में दिया जा सके। शुरू से लेकर आज तक हमें कुछ ही नाम ऐसे मिलते हैं जो वेदों के जानने वाले कहे जा सकते हैं। इसके लिए आर्यसमाज का आधी सदी का प्रयत्न हमें इस परिणाम पर पहुँचाता है कि आम लोगों के लिए वेद का अध्ययन करना और समझना असम्भवप्राय है। वेद तो खोज की उन पुस्तकों के तौर पर रहे हैं जिनका अध्ययन विशेष मनुष्यों के लिए मालूम होता है।

**विदेशी जातियों के लिए भगवद्गीता**

यदि विदेशों में वेद-धर्म के प्रसार का ख्याल हो तो वहाँ के लोगों के हाथों में स्वाध्याय के लिए एक धर्म-पुस्तक का देना आवश्यक है। जब हम भारत में वेदों के पढ़नेवाले इतने कम पाते हैं तब दूसरे देशों में तो उनको समझने वालों के होने की आशा एक प्रकार से और भी कम हो जाती है। कुछ आर्यसमाजी स्वामी दयानन्द-कृत सत्यार्थ-प्रकाश को इस उद्देश्य के लिए पेश करते हैं। परन्तु वे इस बात को भूल जाते हैं कि सत्यार्थ-प्रकाश का एक बड़ा भाग केवल भारत में सम्बन्ध रखता है। जिसमें विदेशियों को कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती। इसके मुकाबले पर भगवद्गीता की हालत देखिए। इसके अन्दर एक विशेष सौंदर्य और आकर्षण पाया जाता है। विदेशों में ऐसे बहुत से स्त्री-पुरुष मिलते हैं जिनको समस्त भगवद्गीता कण्ठस्थ है। इस कारण यह कहना अनुचित नहीं कि भगवद्गीता वह धर्म-पुस्तक है जिससे आर्य-धर्म के फैलाव में काम लिया जा सकता है। इसे अपना धर्म-ग्रन्थ स्वीकार करते हैं। इसके अतिरिक्त क्योंकि इसमें वैदिक ज्ञान का इत्र, जैसा कि ऋषि, मुनि और दार्शनिक लोग मानते चले आये हैं, मौजूद है। इसलिए इसे एकमत होकर आर्य-धर्म की

प्रामाणिक पुस्तक कहना उचित है।

**भगवद्गीता, बाइबल और महाभारत**

कुछ पश्चिमी विद्वानों का विचार है, क्योंकि भगवद्गीता की अति पवित्र शिक्षा बाइबल की शिक्षा से मिलती है, इस कारण भगवद्गीता 'बाइबल' के आधार पर लिखी गई है। यह बिल्कुल वैसा ही व्यवहार है जैसा कुएँ के अन्दर उत्पन्न हुए एक मेंढक ने समुद्र की उस मछली से किया जो बाढ़ आने पर उस कुएँ में आ गिरी थी। मेंढक ने पूछा- 'समुद्र कितना बड़ा है'?' मछली ने उत्तर दिया- 'बहुत बड़ा।' मेंढक अपनी जगह से जरा पीछे हट गया। अब उसने सवाल किया- 'क्या वह इतना बड़ा है?' मछली ने जवाब दिया- 'नहीं, वह बहुत बड़ा है।' तब वह थोड़ा और पीछे हट गया और फिर पूछने लगा। इस प्रकार वह थोड़ा-थोड़ा परे होता और बार-बार वही सवाल दोहराता रहा। जब मछली ने कहा, 'नहीं, वह इससे भी बड़ा है', तब वह घबराकर कहने लगा- 'यह सम्भव नहीं। इससे बड़ा दुनिया में कुछ नहीं हो सकता।' भगवद्गीता जैसी पुस्तक अचानक उग नहीं सकती। इससे पूर्व शतकों की बौद्धिक उन्नति का होना आवश्यक बात है। जब तक उपनिषदों और हिन्दू दर्शनों की फिलासफी विद्यमान न हो तब तक भगवद्गीता लिखी नहीं जा सकती। इसके अतिरिक्त इसकी व्याख्या करने वाले दृष्टान्त महाभारत में ही मिल सकते हैं न कि 'तौरेत' के किस्से-कहानियों में। इसलिए भगवद्गीता की शिक्षा केवल गंगा-तट पर ही सम्भव थी न कि 'दजला और 'फरात' की भूमि में।

**भगवद्गीता का रचयिता**

महाभारत की कथा में भगवद्गीता एक चमकते हीरे के समान है। महाभारत के रचयिता निस्सन्देह ऋषि व्यास थे। भगवद्गीता के ज्ञान का उपदेश चाहे उनकी बौद्धिक शक्ति का फल है चाहे सचमुच श्रीकृष्ण ने ही उसे अर्जुन को दिया, इस बात पर बहस करना सर्वथा निरर्थक है। इससे भगवद्गीता के गौरव में कोई अन्तर नहीं पड़ता। वह गौरव स्वयं भगवद्गीता के अन्दर ही पाया जाता है। अध्याय 18 के श्लोक 75 में संजय कहता है- "इस प्रकार श्रीव्यास की कृपा से श्रीकृष्ण के मुँह से ही सुनाना उचित समझा तो यह बात कि श्री व्यास जैसे ऋषि भी धर्म के तत्त्वज्ञान का प्रचार श्रीकृष्ण के नाम से ही कराना उचित एवं आवश्यक समझते थे, श्रीकृष्ण की विद्वत्ता और बड़प्पन को मानवी सीमा से कहीं आगे ले जाती है।

# कालीबंगा ऋग्वेद के समय की सभ्यता

## सरस्वती नदी

कई पाश्चात्य विद्वान मानते हैं कि सरस्वती नदी भारतवर्ष में न होकर अफगानिस्तान में थी। इनका कहना है कि अफगानिस्तान की हेलमंड नदी ही ऋग्वैदिक सरस्वती थी। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के पूर्व महानिदेशक और प्रख्यात पुराविद् प्रोफेसर बी. बी. लाल के अनुसार यह तर्क युक्तिसंगत नहीं है। उनका कहना है कि ऋग्वेद के दसवें मण्डल में दिए गये नदी स्तुति सूक्त के अनुसार सरस्वती यमुना और सतलुज के बीच थी। न तो यमुना और नहीं सतलुज अफगानिस्तान में है, इसलिए वहाँ सरस्वती का होना असंभव है।

ऋग्वेद में सरस्वती की दो सहायक नदियों का नाम आता है। यह हैं दृषद्वती और आपाया। ये दोनों नदियाँ हरियाणा और राजस्थान से होकर बहती हैं। यह अफगानिस्तान में है ही नहीं।

इसके अतिरिक्त ऋग्वेद में एक सूक्त है जिसमें कहा गया है कि सरस्वती पहाड़ों से निकलकर समुद्र में गिरती थी। प्रोफेसर लाल का कहना है कि अफगानिस्तान में पहाड़ तो हैं पर समुद्र नहीं है। इस कारण भी हेलमंड का सरस्वती होना असंभव है। प्रो. लाल का कहना है कि आर्यों द्वारा भारत पर आक्रमण की बात ही निराधार है। भारतीय सभ्यता अधिक नहीं तो आज से पाँच-छह हजार वर्ष पुरानी तो है ही।

## शिवालिक में उदगम

'राजस्थान पत्रिका' के साथ विशेष बातचीत में प्रोफेसर लाल ने बताया कि भारत में आज भी एक नदी है जो सरस्वती के नाम से अब भी पुकारी जाती है। यह शिवालिक से निकलकर हरियाणा के कुरुक्षेत्र और पिहोवा आदि स्थानों के पास से गुजरती हुई राजस्थान की ओर जाती है। राजस्थान में यह घग्गर के नाम से जानी जाती है।

इस नदी के किनारे कालीबंगा नाम का प्राचीन स्थान था जिसकी बस्ती का आरम्भ ईसा पूर्व दो हजार वर्ष पूर्व हुआ था और ईसा पूर्व दो हजार वर्ष तक यह नगर जीवित रहा। इसका अंत सरस्वती के सूख जाने के कारण ही हुआ। जब सरस्वती में पानी नहीं रहा, तो लोग

कालीबंगा को छोड़कर उत्तरपूर्व की ओर चले गये और हरियाणा के कुछ उत्तरी भागों तथा उत्तर प्रदेश के भी उत्तरी क्षेत्रों, जैसे आलमगीरपुर और हुलास आदि स्थानों पर इस सभ्यता की नई बस्तियाँ बसीं।

सरस्वती सूख गई

सरस्वती के लगभग दो हजार ईसा पूर्व में सूख जाने के अनेक साक्ष्य हैं। नदी के बीच में सात-आठ स्थानों पर बोरिंग की गई जिससे पता चला है कि इस नदी में हिमालय के पर्वतों से निकली हुई उसी प्रकार की भूरे रंग की चमकीली रेत थी जो आजकल यमुना में पाई जाती है।

भूगर्भशास्त्रियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि ऋग्वैदिक सरस्वती का उद्‌गम हिमालय के ग्लेशियर से हुआ था। इन ग्लेशियरों से यह नदी निकल कर आदिबद्री के पास शिवालिक को तोड़ती हुई मैदान में आ जाती थी। इन भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार लगभग दो हजार ईसा पूर्व हिमालय के कुछ हिस्सों में टैक्टोनिक हलचल हुई जिस कारण बाटाहाइफनमारकंडा नाम की एक तीस मीटर ऊँची टैरेस ऊपर उठ गई और इस कारण नदी का पानी बहने में अवरोध हुआ। यह रुका हुआ पानी उलट कर हिमाचल प्रदेश स्थित पाँवटा साहिब के पास पाँवटा टीयर से निकलकर यमुना में जा मिला।

प्रोफेसर लाल के अनुसार सरस्वती की इस कहानी से ऋग्वेद की तिथि पर बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। ऋग्वेद के अनुसार सरस्वती एक बहुत ही बड़ी नदी थी। इसमें इतना जल था कि कभी-कभी यह अपने किनारों को भी तोड़ देती थी। 'पंचविंश ब्राह्मण' में वर्णन है कि उस समय सरस्वती सूख चुकी थी। रेडियो कार्बन के अनुसार सरस्वती के सूखने की तिथि ईसा पूर्व दो हजार वर्ष है। इससे स्पष्ट है कि ऋग्वेद, जिस समय सरस्वती पूर्ण रूप से बह रही थी, ईसा से दो हजार वर्ष से पूर्व ही रहा होगा। इस समय यह कहना समीचीन नहीं है कि वह काल कितना पहले था। यह तिथि अपने में बड़ा महत्व रखती है।

कालीबंगा में जिस सभ्यता के अवशेष मिले हैं, वह सभ्यता उसी प्रकार की थी, जिसे हम मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में पाते हैं। इस सभ्यता को पुरातत्वविद हड़प्पा सभ्यता, सिन्धु सभ्यता और सिंधु सरस्वती

सभ्यता के नाम से पुकारते हैं। चूँकि ऋग्वेद का काल रेडियो कार्बन तिथि के अनुसार ईसा से दो हजार से पहले का है, इसलिए यह सिद्ध होता है कि इस क्षेत्र में पाई जाने वाली हड़प्पाकालीन सभ्यता ऋग्वेद के समय की ही होंगी।

**घोड़ा**

ऋग्वेद कालीन सभ्यता और सिंधु सभ्यता के समन्वय के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों ने प्रश्नचिह्न उठाया है। इन विद्वानों का कहना है कि ऋग्वेद में घोड़े का वर्णन है; सिंधु सभ्यता में घोड़ा नहीं पाया जाता। प्रोफेसर लाल के अनुसार यह आपत्ति बिल्कुल बेजान है। सिंधु सभ्यता के स्थान लोथल (गुजरात) में न केवल घोड़े की अस्थियों के अवशेष मिले हैं बल्कि घोड़े की मिट्टी की मूर्तियाँ भी मिली हैं। कच्छ में सुरकोतदा स्थान पर अश्व के अवशेष बड़ी मात्रा में मिले हैं। इनको आस्ट्रिया के विश्व विख्यात विद्वान बिकोनी ने विशेष रूप से अश्व के ही अवशेष माना है। इस सम्बन्ध में बिकोनी ने अपनी रिपोर्ट भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को भी दी है।

प्रो. लाल ने बताया कि ऋग्वेद और सिंधु सभ्यता के बारे में एक और अवधारणा है। कहा जाता है कि सिंधु सभ्यता के लोग छिद्रयुक्त रथ के पहिये का इस्तेमाल नहीं करते थे जबकि ऋग्वेद में छिद्र युक्त पहिये का उल्लेख है। यह धारणा भी गलत है, क्योंकि वनावली और कालीबंगा जैसे स्थानों से जो अवशेष मिले हैं, उनसे पता चलता है कि सिंधु सभ्यता वाले छिद्र युक्त पहिये का प्रयोग करते थे।

**आर्य घुमन्तु नहीं थे**

सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि कुछ पाश्चात्य विद्वानों और उनके भारतीय अनुयायियों के अनुसार ऋग्वैदिक आर्य खानाबदोश थे। यह बिल्कुल गलत है। ऋग्वेद में सभा और समिति आदि संस्थाओं का उल्लेख है जिनमें राजा स्वयं भाग लेता था। यही नहीं, ऋग्वेद में राजाओं के भी अनेक प्रकार बताये गये हैं। कुछ राजाओं के नाम का वर्णन करते हुए सम्राट शब्द का प्रयोग किया है; कुछ अन्य राजाओं के लिए राजन् और शेष राजाओं के लिए राजक शब्द का प्रयोग किया है। क्या खानाबदोश लोगों के बीच में इस तरह के

राजाओं के क्रम हो सकते हैं? ये सभी धारणाएँ पिछले सौ वर्षों से जनमानस में जमाई गई हैं। नये प्रमाण इस बात को सिद्ध करते हैं कि ये सब निराधार हैं।

**आर्यों ने भारत पर आक्रमण नहीं किया**

व्हीलर आदि विद्वानों को अवधारणा रही है कि आर्यों ने भारत वर्ष पर आक्रमण किया जिसके कारण सिंधु सभ्यता का नाश हो गया। प्रो. लाल का कहना है कि सिंधु सभ्यता की किसी भी बस्ती पर आक्रमण का कोई भी प्रमाण नहीं मिलता और अब सभी विद्वान् इस बात से सहमत हो रहे हैं कि भारत पर आर्यों का कोई आक्रमण नहीं हुआ था। रही सिंधु सरस्वती के विनाश की बात, वह भी निराधार है।

प्रो. लाल की हाल में प्रकाशित 'द सरस्वती फ्लोज ऑन' पुस्तक में लगभग सौ चित्र दिये गये हैं। इनमें एक ओर सिंधु सभ्यता से प्राप्त वस्तुएँ है, तो दूसरी ओर आजकल की वस्तुएँ। उदाहरण के रूप में सिंधु सभ्यता से प्राप्त स्त्रियों की कुछ मूर्तियों को सिंदूर से लाल रंग में दिखाया गया है। इस मूर्ति में बाल काले रंग से दिखाये गये हैं और जेवरात पीले रंग से जो कि उनके सोने से बने होने का प्रमाण हैं। कुछ अन्य मूर्तियों में लोगों को 'नमस्ते' करते हुए दिखाया गया है। यौगिक आसन दिखाने वाली अनेक मूर्तियाँ है। इन सभी से स्पष्ट होता है कि भारतीय सभ्यता अधिक नहीं तो आज से पाँच छह हजार वर्ष पुरानी अवश्य है।

[(संपादकः) वेदों में इतिहास या भूगोल का वर्णन नहीं है। वेद अति प्राचीन इसलिए उसमें आए ऐतिहासिक या भौगोलिक नामों को वर्तमान नदियों के नाम मानना उचित नहीं है।]

***विश्व हिन्दू से साभार***

• *"We should have but one desire today- to die so that india may live-the desire to face a martyr's death. so that the path to freedom may be paved with the marty'r blood".*

• *"No real change in history has ever beeen achieved by discussions"* ***-Subash Chandra Bose***

# कश्मीर समस्या सीमा की नहीं, सम्प्रदाय की है

*–आचार्य आर्यनरेश*

मुस्लिम वोट के लोभ में गत 70 वर्षों में एक समान कानून न लगाने के कारण लाहौर, सिन्ध, बंगलादेश व मुलतान के पश्चात् मुसलमान भारतीय संविधान के विरुद्ध यूनिफार्म सिविल कोड की अवहेलना करके थोक के भाव में बच्चे बढ़ा रहे हैं। भारत के देशद्रोही नेताओं की कमजोरी को ध्यान में रखते हुए यहाँ के मुसलमान अच्छी तरह से जानते हैं कि भारत में शासन करनै का अधिकार गुणवत्ता बढ़ाने से नहीं मिलता, अपितु मतगणना बढ़ाने से ही मिलता है।

भारत के कुर्सीप्रेमी नेता मुस्लिम वोट छूट जाने के भय से यहाँ कोई ऐसा देश हितकारी कानून नहीं बनने देते जिससे कि मुसलमान नाराज हों। इसीलिए वे कश्मीर के मुद्दे पर भी पाकिस्तान के सामने झुकते चले जाते हैं। कश्मीर को अरबों रुपयों का (दिल्ली से) सहयोग मिलने पर भी घाटी के मुसलमान भारत सरकार को आँखें दिखाते रहते हैं तथा स्वतंत्र होने अथवा पाकिस्तान के साथ मिल जाने का राग अलापते रहते हैं। श्रीनगर के इन बहुसंख्यक कश्मीरी मुसलमानों की आड़ में पाकिस्तानी नेता भी अपने समर्थक देशों की सहायता से जनमत की दुहाई देकर भारत को डराने व दबाने का प्रयास करते रहते हैं।

शर्म की बात है कि भारत के बहुत से नेता कश्मीर के मुसलमान–बहुल आतंकवाद को समझते हुए भी भारत के शेष प्रान्तों से मुस्लिम वोट कट जाने के भय से बलपूर्वक वास्तविकता को प्रकट करने के स्थान पर उसे छिपाते व दबाते चले आ रहे हैं। यह बात सर्वविदित है कि महाराजा हरिसिंह ने अपना सम्पूर्ण कश्मीर भारत को सौंपा था परन्तु तथाकथित पाकिस्तानी कबाइलियों ने हमला करके उसको 2/5 भाग दबा लिया। पं. नेहरु ने भयंकर भूल करके भारतीय सेनाओं को आगे बढ़ने से रोक दिया और कश्मीर समस्या को यू. एन.ओ. में पहुँचा दिया परन्तु सच्चाई यही है कि सारा कश्मीर हमारा है क्योंकि आज भी यह बात सत्य सिद्ध करने वाले महाराजा हरिसिंह जी के राजपुत्र श्री कर्णसिंह जी विद्यमान हैं। वैसे भी पुत्र ही पिता की संपत्ति का वारिस व उसे आगे किसी और को देने का अधिकारी होता है और उनकी सहायता से यू.एन.ओ. का अवरोध भी हटाया जा सकता है। हमारे देश के नेताओं को अपने ही भूभाग की चर्चा न करके पाक द्वारा दबाये गये 2/5 कश्मीर की ही चर्चा करनी

चाहिए। इस बात को सभी देशवासी भली प्रकार जान लें कि कश्मीर की समस्या सीमाओं की नहीं, अपितु सम्प्रदाय की है। पाकिस्तान कश्मीर में मुस्लिम बहुसंख्या का लाभ उठाकर भारत को दबाने का प्रयास करता है। कश्मीर का मुस्लिम आतंकवाद वही 70 वर्ष पुरानी मुस्लिम लीग की ही नकल है। तब भी जिन्ना के सहयोग व पं. नेहरू, मा. गाँधी की अज्ञानता के कारण पृथक् राष्ट्रीयता (रहन-सहन, खान-पान, मजहब) का ढिंढोरा पीटकर देश को बाँट दिया गया था, अब भी कश्मीरी मुसलमान अपनी हुर्रियत की अकड़ दिखाकर भारत से अरबों रुपया लूट रहा है। क्योंकि कश्मीर में मुसलमान बहुसंख्यक हैं, अतः वे दिल्ली की सरकार के स्थान पर पाकिस्तान की सरकार को अधिक पसन्द करते हैं। अतः कश्मीर की समस्या सीमाओं की नहीं, सम्प्रदाय की है। इसीलिए पाकिस्तान भी बार-बार कश्मीर में जनमत की बात करता है।

जनमत का नाम सुनकर भारतीय नेताओं को डरने या दबने के स्थान पर यही प्रश्न पाकिस्तानी नेताओं से करना चाहिए कि क्या जनमत के आधार पर वे सिन्धियों, कबायलियों बलूचों तथा पख्तूनियों को पाकिस्तान से पृथक होने की स्वीकृति देंगे? यदि नहीं, तो फिर किस मुँह से वे जनमत के आधार पर कश्मीर को भारत से अलग करने की बात कर रहे हैं? पाकिस्तान द्वारा कश्मीर हेतु भारत को दिखाया जा रहा दूसरा (हौआ) डर यू.एन.ओ. का है। क्योंकि आर्यनीतिविहीन पं. नेहरू की अदूरदर्शिता के कारण कश्मीर समस्या 'आ बैल मुझे मार' की कहावत को चरितार्थ करते हुए यू.एन.ओ. में पहुँचा दी गई। परन्तु यू.एन.ओ. की धौंस दिखाने वाले अमरीका, इंग्लैण्ड या पाकिस्तान से भी भारतीय नेताओं को कदापि नहीं डरना चाहिए। क्योंकि यू.एन.ओ. कोई ऐसी सर्वमान्य पक्षपातरहित प्रभुसत्ता या विश्व के देशों के विवादों के समाधान हेतु रामबाण नहीं हैं अपितु अमरीका तथा इंग्लैण्ड के हाथों की कथपुतली जैसी है। क्या अमरीकन बुश ने इराक के विषय में यू.एन.ओ. की बात मानी? क्या इजराइल ने फिलिस्तीन के विषय में यू.एन.ओ. की बात मानी? क्या टोनी ब्लेयर के इंग्लैण्ड ने सद्दाम हुसैन के विषय में यू.एन.ओ. की बात मानी थी? क्या यू.एन.ओ. की बात मानकर पाकिस्तान ने भारत में आतंकवादी कार्यवाहियों पर रोक लगाई? क्या चीन ने यू.एन.ओ की बात मानकर दलाईलापा के तिब्बत को खाली किया? यदि नहीं तो

फिर कुछ ईसाई देशों की कठपुतली बने इस यू.एन.ओ. से हमें इतना भयभीत होने की क्या आवश्यकता है? क्योंकि महाराजा हरिसिंह आर्य हिन्दू थे और उन्होंने अपना पूर्ण कश्मीर भारत को सौंपा था, जिसका सबसे बड़ा गवाह महाराजा कर्णसिंह (उनका सुपुत्र) आज भी भारत में विद्यमान है।

कश्मीर या भारत में चल रहे आतंकवाद के विषय में सबसे अधिक आश्चर्य, शर्म या देशद्रोह की यह बात है कि देश का प्रत्येक चतुर नेता 'कश्मीर' में मुसलमान और गैर-मुसलमान के होने वाले खूनी दंगों के रहस्यों को जानता है जिसके परिणामस्वरूप वहाँ से लगभग चार लाख हिन्दुओं (पंडितों) का अपना जन्मस्थान छोड़कर दर-दर की ठोकर खानी पड़ रही है। उन्हें लूटपाट व कत्ल करके बाहर क्यों निकाला गया? यदि कश्मीर मात्र सीमा का विवाद होता तो फिर कश्मीरी हिन्दू भी वहीं रहकर उसे अलग करने की बात करते। अतः कश्मीर का विवाद सीमा का नहीं, मुस्लिम सम्प्रदाय के आतंक का है। सच्चे नेताओं को चाहिए कि कश्मीरी विवाद के मूल आधार पर 'मुस्लिम आतंकवाद' को छिपाने की बजाय साधारण जनता तक को बताने का कष्ट करें और कुर्सी के लोभ में मुस्लिम वोटों का मोह त्यागकर अपनी देशभक्ति का परिचय दें। नेताओं को यह बात कदापि न भूलनी चाहिए कि ऐसा विवाद यदि मुसलमानों के अधिक होने से आज वहाँ तो कल यह देश के किसी भी भाग में सिर उठा सकता है। परन्तु यदि मुस्लिम बहुल होने से कश्मीर की स्वायत्तता जैसी माँग मान ली जाती है तो फिर 'भारत' सरदार पटेल से पूर्व वाले खण्ड-खण्ड में बँटकर बर्बाद हो जायेगा। 'कश्मीरी स्वायत्तता' जिसे भारत की जनता आज नहीं जानती, उसका अर्थ मात्र कुछ अधिक आर्थिक छूट नहीं, अपितु भारत के तिरंगे, सुप्रीम कोर्ट, आई.ए.एस., आई.पी.एस. व चुनाव अधिकारी तथा भारतीय संविधान के बिना एक स्वच्छन्द मुस्लिम राज्य बनाने की छूट है जहाँ मुख्यमंत्री ही प्रधानमंत्री होगा। अतः कश्मीरी स्वायत्तता का सीधा-सा अर्थ है 'कश्मीर की हत्या' अर्थात् पाकिस्तान की तर्ज पर भारतमाता का एक और बँटवारा।

भारतीय नेताओं को चाहिए कि समय रहते मुस्लिम वोट का मोह त्यागकर चाणक्य व योगेश्वर कृष्ण वाला अनुशासन का शस्त्र सँभालें और कश्मीर तथा देश के किसी भी भूभाग में इस्लामिक बहुसंख्यक 'आतंकवाद' को शक्ति से कुचलकर देशभक्त होने का परिचय दें।

पाकिस्तान से जब भी चर्चा हो तब हमारे दबाये गये 2/5 भाग कश्मीर की ही हो, भले ही वह अमरीका, इंग्लैण्ड या चीन जैसे आकाओं की भी गाथाओं को क्या न गायें। भारतीय नेताओं को अपनी पार्टी या मुस्लिम वोटों से अधिक अपने भारत के प्रति वफादारी को निभाना चाहिए क्योंकि कोई भी पार्टी या नेता भी तो तभी बचेगा जब देश बचेगा।

क्या भारत सरकार वोट के लोभ में आतंकवादियों के हाथों बिक चुकी है? अथवा सारी की सारी सरकार और उसके सहयोगी पूर्णतः नपुंसक हैं? लाखों हिन्दुस्तानियों का खून बहने पर भी कश्मीर और पाकिस्तान के विरुद्ध कोई कठोर कार्यवाही क्यों नहीं की जा रही है?

यदि देश के नेताओं को मुस्लिम आंतकवादी वोट अधिक प्रिय हैं तो फिर प्रतिदिन के कश्मीरी दंगों, पाकिस्तानी घुसपैठियों से छुटकारा पाने का एक ही सरल उपाय है कि मुस्लिम बाहुल्यवाला कश्मीर ही नहीं, अपितु क्यों विश्व में सर्वाधिक मुस्लिम बाहुल्य वाला भारत ही पाकिस्तान को सौंप दिया जाए? इससे कम-से-कम विशाल भारत तो पुनः एक हो जायेगा। अतः हिन्दुस्तान को हिन्दुस्तान के रूप में सुरक्षित रखने हेतु देश की आर्य हिन्दू जनता को गुणवत्ता से अधिक ध्यान 'गणना' बढ़ाने में देना चाहिए।

भारत सरकार को चाहिए कि कश्मीर समस्या के समाधान हेतु तथा पाकिस्तानी दरिंदों से निबटने के लिए यू.एन.ओ. या चीन आदि से डरकर उन्हें आलीशान तोहफे देकर, पाँच तारा होटलों में बिरयानी खिलाकर, यहाँ की गरीब जनता का धन मिट्टी में न मिलायें अपितु राम, कृष्ण, चाणक्य, दयानन्द व इजराइल की तर्ज पर चलकर घुसपैठ करने तथा देश को पुनः बाँटने की बात करने वाले पाकिस्तानी व पाकिस्तानपरस्त कश्मीरी दरिंदों को बेरहमी से कुचल दें। प्रतिदिन आतंकवाद या घुसपैठ का राग अलापना छोड़कर जिन्दादिली से घुसपैठ का जवाब महाघुसपैठ से देकर पाक में बैठे भारतद्रोहियों को जिन्दा जलाकर पुनः भारत को सन् 47 से पहले वाला अखंड भारत बना दें। देशभक्त लोग ध्यान में रखें कि पाकिस्तान के कब्जे में भारत की 87000 वर्ग कि.मी. भूमि है। 5100 वर्ग कि.मी. भारत की भूमि उसने चीन को दे दी है। चीन के कब्जे में भारत की 38000 वर्ग कि.मी. भूमि है। प्रजा पूछे कि नेता क्यों चुप हैं?

# जब पद्म श्री मीराबाई चानू ने देश का गौरव बढ़ाया

मीराबाई चानू की कहानी है यह। उस समय उसकी उम्र 10 साल थी। इम्फाल से 200 कि.मी. दूर नोंगपोक काकचिंग गाँव में गरीब परिवार में जन्मी और छह भाई बहनों में सबसे छोटी मीराबाई चानू अपने से चार साल बड़े भाई सैखोम सांतोम्बा मीतेई के साथ पास की पहाड़ी पर लकड़ी बीनने जाती थीं। एक दिन उसका भाई लकड़ी का गट्ठर नहीं उठा पाया लेकिन मीरा ने उसे आसानी से उठा लिया और वह उसे लगभग 2 कि.मी. दूर अपने घर तक ले आई।

शाम को पड़ोस के घर मीराबाई चानू टीवी देखने गई तो वहाँ जंगल से उसके गट्ठर लाने की चर्चा चल पड़ी। उसकी माँ बोली, "बेटी आज यदि हमारे पास बैलगाड़ी होती तो तुझे गट्ठर उठाकर न लाना पड़ता।"

"बैलगाड़ी कितने रुपये की आती है माँ?" मीराबाई ने पूछा

"इतने पैसों की जितने हम कभी जिंदगीभर देख न पाएँगे।"

"मगर क्यों नहीं देख पाएँगे, क्या पैसा कमाया नहीं जा सकता? कोई तो तरीका होगा बैलगाड़ी खरीदने के लिए पैसा कमाने का?" चानू ने पूछा तो तब गाँव के एक व्यक्ति ने कहा, "तू तो लड़कों से भी अधिक वजन उठा लेती है, यदि वजन उठाने वाली खिलाड़ी बन जाए तो एक दिन जरूर भारी-भारी वजन उठाकर खेल में सोने का मेडल जीतकर उसे बेचकर बैलगाड़ी खरीद सकती है।"

"अच्छी बात है तब तो मैं सोना जीतकर उसे बेचकर बैलगाड़ी खरीदूँगी।" उसमें आत्मविश्वास था।

उसने वजन उठाने वाले खेल के बारे में जानकारी हासिल की, लेकिन उसके गाँव में वेटलिफ्टिंग सेंटर नहीं था इसलिए उसनें रोज़ ट्रेन से 60 कि.मी. का सफर तय करने की सोची।

शुरुआत उसने इंफाल के खुमन लंपक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स से की। एक दिन उसकी रेल लेट हो गई, रात का समय हो गया। शहर में उसका कोई ठिकाना न था, कोई उसे जानता भी न था। उसने सोचा कि किसी मंदिर में शरण ले लेगी और कल अभ्यास करके फिर अगले दिन शाम को गाँव चली जाएगी। एक अधूरा बना भवन उसने देखा जिस पर आर्य

समाज मंदिर लिखा था। वह उसमें चली गई। वहाँ उसे पुरोहित जी मिले जिन्हें उसने बाबा कहकर पुकारा और रात के लिए शरण माँगी।

"बेटी, मैं आपको शरण नहीं दे सकता, यह मंदिर है और यहाँ एक ही कमरे पर छत है जिसमें मैं सोता हूँ दूसरे कमरे पर छत अभी डली नहीं, एंगल पड़ गए हैं, पत्थर की सिल्लियाँ आई पड़ी हैं लेकिन पैसे खत्म हो गए। तुम कहीं और शरण ले लो।"

"मैं रात को कहाँ जाऊँगी बाबा," मीराबाई आगे बोली, "मुझे बिन छत के कमरे में ही रहने की इजाजत दे दो।"

"अच्छी बात है, जैसी तेरी मर्जी।" बाबा ने कहा।

वह उस कमरे में माटी एकसार करके उसके ऊपर ही सो गई, अभी कमरे में फर्श तो डला नहीं था। जब छत नहीं थी तो फर्श कहाँ से होता भला। लेकिन रात के समय बूँदाबाँदी शुरू हो गई और उसकी आँख खुल गई। मीराबाई ने छत की ओर देखा। दीवारों पर ऊपर लोहे की एंगल लगी हुई थी लेकिन सिल्लियाँ तो नीचे थीं। आधा अधूरा जीना भी बना हुआ था। उसने नीचे से पत्थर की सिल्लियाँ उठाईं और ऊपर एंगल पर रख दीं और फिर थोड़ी ही देर में दर्जनों सिल्लियाँ कक्ष की दीवारों के ऊपर एंगल पर रखते हुए कमरे को छाप दिया। उसके बाद वहाँ एक बरसाती पन्नी पड़ी थी सिल्लियों पर डालकर नीचे से फावड़ा और तसला उठाकर मिट्टी भर-भरकर ऊपर छत पर सिल्लियों पर डाल दी। इस प्रकार मीराबाई ने छत तैयार कर दी।

बारिश तेज हो गई और वह अपने कमरे में आ गई। अब उसे भीगने का डर न था क्योंकि उसने उस कमरे की छत खुद ही बना डाली थी। अगले दिन बाबा को जब सुबह पता चला कि मीराबाई ने कमरे की छत डाल दी तो उसे आश्चर्य हुआ और उसने उसे मंदिर में हमेशा के लिए शरण दे दी ताकि वह खेल की तैयारी वहीं रहकर कर सके क्योंकि वहाँ से खुमन लंपक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स निकट ही था। बाबा उसके लिए खुद चावल तैयार करके खिलाते और मीराबाई ने कक्ष को गाय के गोबर और पीली मिट्टी से लैपकर सुंदर बना दिया। समय मिलने पर बाबा ने उसे एक किताब दी जिसे वह पढ़ा करती और और उस किताब से उसके अंदर धर्म के प्रति आस्था तो जागी ही

साथ ही देशभक्ति की भावना भी जाग उठी। इसके बाद मीराबाई चानू 11 साल की उम्र में वेटलिफ्टिंग की अंडर-15 चैंपियन बन गई और 17 साल की उम्र में जूनियर चैंपियन का खिताब अपने नाम किया। लोहे की बार खरीदना परिवार के लिए भारी था। मानसिक रूप से परेशान मीराबाई ने अपनी समस्या बाबा से बताई तो बाबा बोले, "बेटी चिंता न करो, शाम को जब आओगी तो बार तैयार मिलेगा।" वह शाम को जब आई तो बाबा ने बाँस की बार बनाकर तैयार कर दी ताकि वह अभ्यास कर सके। बाबा ने उनकी भेंट कुंजुरानी से करवाई। उन दिनों मणिपुर की महिला वेटलिफ्टिंग की कुंजुरानी देवी स्टार थीं और एथेंस ओलंपिक में भाग लेने गई थीं। इसके बाद तो मीराबाई ने कुंजुरानी को अपना आदर्श मान लिया और कुंजुरानी ने बाबा के आग्रह पर इसकी हर संभव सहायता करने का बीड़ा उठाया। जिस कुंजुरानी को देखकर मीरा के मन में विश्व चैंपियन बनने का सपना जागा था, अपनी उसी आइडल के 12 साल पुराने राष्ट्रीय रिकॉर्ड को मीरा ने 2016 में तोड़ा,वह भी 192 कि.ग्रा. वजन उठाकर। 2017 में विश्व भारोत्तोलन चैम्पियनशिप, अनाहाइम, कैलिफोर्निया, संयुक्त राज्य अमेरिका में उसे भाग लेने का अवसर मिला। मुकाबले से पहले एक सहभोज में उसे भाग लेना पड़ा। सहभोज में अमेरिकी राष्ट्रपति मुख्य अतिथि थे। राष्ट्रपति ने देखा कि मीराबाई को उसके सामने ही पुराने बर्तनों में चावल परोसा गया जबकि सब होटल के शानदार बर्तनों में शाही भोजन का लुत्फ ले रहे थे। राष्ट्रपति ने प्रश्न किया, "इस खिलाड़ी को पुराने बर्तनों में चावल क्यों परोसा गया, क्या हमारा देश इतना गरीब है कि एक लड़की के लिए बर्तन कम पड़ गए, या फिर इससे भेदभाव किया जा रहा है, यह अछूत है क्या? "नहीं महामहिम ऐसी बात नहीं है," उसे खाना परोस रहे लोगों से जवाब मिला, "इसका नाम मीराबाई है। यह जिस भी देश में जाती है, वहाँ अपने देश भारत के चावल ले जाती है। यह विदेश में जहाँ भी होती है, भारत के ही चावल उबालकर खाती है। यहाँ भी ये चावल खुद ही अपने कमरे से उबालकर लाई है।

"ऐसा क्यों?" राष्ट्रपति ने मीराबाई की ओर देखते हुए पूछा।

"महामहिम, मेरे देश का अन्न खाने के लिए देवता भी तरसते हैं, इसलिए मैं अपने ही देश का अन्न खाती हूँ।

"ओह बहुत देशभक्त हो तुम, जिस गाँव में तुम्हारा जन्म हुआ, भारत में जाकर उस गाँव के एक बार अवश्य दर्शन करूँगा।" राष्ट्रपति बोले।

"महामहिम इसके लिए मेरे गाँव में जाने की क्या जरूरत है?"

"क्यों?"

"मेरा गाँव मेरे साथ है, मैं उसके दर्शन यहीं करा देती हूँ।"

"अच्छा कराओ दर्शन!" कहते हुए वे उस मूर्ख लड़की की बात पर हँस पड़े।

मीराबाई अपने साथ हैंडबैग लिए हुए थीं, उसने उसमें से एक पोटली निकाली, फिर उसे पहले खुद माथे से लगाया फिर राष्ट्रपति की ओर करते हुए बोली, "यह रहा मेरा पावन गाँव और मेरा महान देश।"

"यह क्या है?" राष्ट्रपति पोटली देखते हुए बोले, "इसमें तो मिट्टी है?"

"हाँ यह मेरे गाँव की पावन मिट्टी है, इसमें मेरे देश के देशभक्तों का लहू मिला हुआ है, सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर 'आजाद' का लहू इस मिट्टी में मिला हुआ है, इसलिए यह मिट्टी नहीं, मेरा संपूर्ण भारत है"

"ऐसी शिक्षा तुमने किस विश्वविद्यालय में पाई चानू?"

"महामहिम ऐसी शिक्षा विश्वविद्यालय में नहीं दी जाती, विश्वविद्यालय में तो मैकाले की शिक्षा दी जाती है, ऐसी शिक्षा तो गुरु के चरणों में मिलती है, मुझे आर्य समाज मे हवन करने वाले बाबा से यह शिक्षा मिली है, मैं उन्हें सत्यार्थप्रकाश पढ़कर सुनाती थी, उसीसे मुझे देशभक्ति की प्रेरणा मिली।"

"सत्यार्थप्रकाश"

"हाँ सत्यार्थप्रकाश", चानू ने अपने हैंडबैग से सत्यार्थप्रकाश की प्रति निकाली और राष्ट्रपति को थमा दी, "आप रख लीजिए, मैं हवन करने वाले बाबा से और ले लूँगी।"

"कल का गोल्ड मैडल तुम्हीं जीतोगी," राष्ट्रपति बोले, "मैंने पढ़ा है कि

तुम्हारे भगवान् हनुमान ने पहाड़ हाथों पर उठा लिया था, लेकिन कल यदि तुम्हारे मुकाबले हनुमान भी आ जाएँ तो भी तुम ही जीतोगी। तुम्हारा भगवान् भी हार जाएगा, तुम्हारे सामने कल।"

राष्ट्रपति ने वह किताब एक अधिकारी को देते हुए आदेश दिया, "इस किताब को अनुसंधान के लिए भेज दो कि इसमें क्या है, जिसे पढ़ने के बाद इस लड़की में इतनी देशभक्ति उबाल मारने लगी कि अपनी धरती के चावल लाकर हमारे सबसे बड़े होटल में उबालकर खाने लगी।" चानू चावल खा चुकी थी, उसमें एक चावल कहीं लगा रह गया तो राष्ट्रपति ने उसकी प्लेट से वह चावल का दाना उठाया और मुँह में डाल लिया उनके मुख से यही निकला, "यकीनन कल का गोल्ड मैडल यही लड़की जीतेगी, देवभूमि का अन्न खाती है यह।" और अगले दिन मीराबाई ने स्वर्ण पदक जीत लिया लेकिन किसी को इस पर आश्चर्य नहीं हुआ, सिवाय भारत की जनता को। अमेरिका तो पहले ही जान चुका था कि वह जीतेगी, बी. बी. सी. जीतने से पहले ही मुख्य खबर बना चुकी थी, जीतते ही बी.बी.सी. पाठकों के सामने था जबकि भारतीय मीडिया अभी तक मुख्य खबर आने का इंतजार कर रहा था। इसके बाद चानू ने 196 कि.ग्रा., जिसमें 86 कि.ग्रा. स्नैच में तथा 110 कि.ग्रा. क्लीन एण्ड जर्क में था, इस वजन को उठाकर भारत को 2018 राष्ट्रमण्डल खेलों का पहला स्वर्ण पदक दिलाया। इसके साथ ही उसने 48 कि.ग्रा. श्रेणी का राष्ट्रमण्डल खेलों का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। 2018 राष्ट्रमण्डल खेलों में विश्व कीर्तिमान के साथ स्वर्ण जीतने पर मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने 15 लाख की नकद धनराशि देने की घोषणा की। 2018 में उन्हें भारत सरकार ने पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया। यह पुरस्कार मिलने पर मीराबाई ने सबसे पहले अपने घर के लिए बैलगाड़ी खरीदी और बाबा के मंदिर को पक्का करने के लिए एक लाख रुपये उन्हें गुरुदक्षिणा में दिए।

# पूर्वोत्तर के छह राज्यों में अब हिन्दू हो गए अल्पसंख्यक

*–शरद गुप्ता*

उत्तर पूर्व भारत के छह राज्यों में हिन्दुओं की जनसंख्या पचास प्रतिशत से कम हो गई है। उत्तरी बिहार और उसमें लगते पश्चिम बंगाल के कई जिलों में मुसलमानों की जनसंख्या 50 से 75 प्रतिशत हो गई है। कश्मीर घाटी में मात्र एक लाख हिन्दू बचे हैं। लेकिन उनमें स्त्रियाँ और बच्चे केवल 13 हजार हैं। इनमें भी चित्तीसिंहपुरा के आसपास रहने वाले लगभग पचास हजार सिख शामिल हैं।

ये आंकड़े विश्व हिन्दू परिषद् या राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की किसी प्रचार पत्रिका से नहीं लिए गए हैं। ये भारत सरकार द्वारा 2011 में कराई जनगणना के आंकड़े हैं जिनकी चैन्नई स्थित समाजनीति समीक्षण केन्द्र के तीन समाजशास्त्रियों ने धर्म के आधार पर विवेचना की है। अशोक जोशी, एम. श्रीनिवास और जितेन्द्र बजाज ने इन आंकड़ों को धर्मानुसार जनसांख्यिकी नामक पत्रिका में संजोया है। यह बात और है कि गुरुवार शाम को इस पुस्तक का विमोचन सरसंघचालक श्री सी. सुदर्शन के हाथों हुआ। पुस्तक के अनुसार पिछले एक दशक में देश के कई भागों की धर्मानुसार जनसंख्या वृद्धि की गति 20.34 थी जोकि पिछले दशक के मुकाबले तीन प्रतिशत कम है जबकि मुसलमान 26.5 प्रतिशत की गति से बढ़े हैं। पिछले दशक के मुकाबले इसमें भी तीन प्रतिशत से अधिक की कमी आई है। जबकि ईसाइयों की जनसंख्या वृद्धि की दर में लगभग छह प्रतिशत का इजाफा हुआ है और अब यह 23 प्रतिशत है। जहाँ गोवा में हिन्दुओं की जनसंख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है वहीं देश के उत्तर पूर्व भाग में मुसलमानों और ईसाइयों की संख्या अप्रत्याशित रूप से बढ़ गई है। 1901 की जनसंख्या के अनुसार इस क्षेत्र में 91 प्रतिशत हिंदू थे और

2 प्रतिशत ईसाई लेकिन 2011 में हिन्दुओं का प्रतिशत 49.4 रह गया जबकि ईसाइयों का प्रतिशत 45.4 और मुसलमानों का प्रतिशत 5.2% हो गया है। पिछले एक दशक में यहाँ ईसाइयों का अनुपात 6.4 प्रतिशत बढ़ा है। मेघालय में अब 70 प्रतिशत ईसाई हैं, मिजोरम में 87 प्रतिशत, नागालैण्ड में 90 प्रतिशत और मणिपुर में 37 प्रतिशत। उत्तर पूर्व में त्रिपुरा एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ पिछली शताब्दी में हिन्दुओं की जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई। 1901 में वहाँ 73 प्रतिशत हिन्दू थे जबकि 1999 में 91 प्रतिशत। लेकिन पिछले एक दशक में उनकी जनसंख्या में मामूली कमी आई है और अब उनका प्रतिशत 89 रह गया है। इन समाजशास्त्रियों के अनुसार उत्तर बिहार और उससे सटे बंगाल के कुछ जिलों में बंगलादेश से आए घुसपैठियों के कारण मुसलमानों का प्रतिशत बहुत तेजी से बढ़ा है। किशनगंज में 68 प्रतिशत मुसलमान हैं जबकि धुबरी में 74%, बरपेटा में 59%, माल्दा में 50%, मुर्शिदाबाद में 64%, नैगाँव में 51%, मरिगाँव में 48%, अररिया में 41%, कटिहार में 43%, बोंगाईगाँव में 39% उत्तर दीनाजपुर में 47%, पूर्णिया में 37%, पाकुड़ में 32% और वीरभूमि में 35 प्रतिशत मुसलमान आबादी हैं। वहीं असम के हाईलाकंडी में 58 प्रतिशत, कछार में 36 प्रतिशत और करीमगंज में 52 प्रतिशत मुसलमान हैं।

**दैनिक 'हिन्दुस्तान' से साभार**

- *"Forget not that the grossest crime is to compromise with injustice and wrong. Remember the eternal law: you must give, if you want to get."*
- *"Freedom is not given - it is taken".*
- *"Soldiers who always remain faithful to their nation, who are alway prepared to sacrifice their lives, are invincible."*
- *"Give me blood and I will give you freedom."*
- *"It is our duty to pay for our liberty with our own blood. The freedom that we shall win through our sacrifice and exertions, we shall be able to preserve with our own strength".*

***-Subhash Chandra Bose***

# LEGENDS OF GURU NANAK

*-Reena Singh*

Thursday is Gurupurab. The 1469 AD-born Guru turns 542 years on November 10, but like his teachings, he remains wibrant and alive in the hearts of the 25 million Sikhs world-wide who revere him as their Guru. Sikhs celebrate this day every year with jaloos or processions, day-long langar and kirtan programmes and spirited participation in the Guru-ka-langar which Guru Nanak had initiated. At night, Sikhs light up their homes, and burst the crackers they specially save up from Deepavali.

Guru Nanak, maverick poet, spiritual seeker and teacher made a huge impact across India back in the 15th century. He toured Asia, from Mecca-Medina in the west to Burma in the east and as far down as Ceylon in the south, spreading his message of love and endearing himself to both Hindus and Muslims. His followers, the Sikhs of today, are known to have been drawn from both communities.

A number of legends are assosiated with Guru Nanak and Sikh children have grown up listening to these tales in wonderment and fascination. Each story comes packed with a powerful message-that God is One, belongs to everyone and loves all his creations equally. These colourful parables exist today through the Janamsakhis, largely believed to have been written in the 18th century. Says author Kirpal Singh in his introduction to Janamsakhi Tradition-An Analytical Study, that janamaskhis are "compilations of anecdotes on the life of Guru Nanak and anthologies of stories told of his life." He adds that though these are based on facts, they were written "from the stand point of faith".

**Thread Of Wisdom**

There is this much-loved story of Guru Nanak refusing to wear the sacred thread that Hindu boys of his caste had to don to distinguish themselves from others. Nanak refused, saying that people should be distinguished by their deeds and individual qualities, and not by threads. And these

pearls of wisdom came from a young Nanak, aged only 11. The boy grew up special, lost in search of the true meaning of God, till he finally left home and family to find this truth. It was then that he began his crusade against the fanaticism, introlerance, meaningless rituals and discrimination of caste and sex that marked the two major religions of his time.

He taught that God was one, based on Truth, and that everyone, man and woman was equal in His eyes. On this simple wisdom, the tenets of Sikhism rest. As his fame grew, Baba Nanak became Guru Nanak, and tales of his miracles reached far and wide.

**God Is Everywhere**

On one occasion, while in Mecca, he fall asleep with his feet towards the mosque. He was woken up rudely and asked to shift his feet. Nanak asked the people to turn his feet in a direction where God did not dwell, if they thought his action was disrespectful. It is said that in every direction that his feet were turned, there was a mosque! Nanak later said: "To worship an image yet to have the mind impure is all in vain."

Another legend says that Baba Nanak disappeared under water for three days. He went in a seeker, and came out initiated and completely changed, a Guru.

Another magical tale revolves around his stay with a poor farmer, Lalo. A rich man of the area, Malik Bhago had also invited the Guru to stay with him, but the Guru chose to stay with Lalo. When Bhago demanded an explanation for this insult, Guru Nanak asked for chapati's from both Lalo and Bhago. Then, holding them in either hand, he squeezed the chappatis. Out fell milk from Lalo's chapattis. Out fell milk from Lalo's chapattis, a symbol of his hard work, while drops to blood fell from Bhago's chapattis, standing for the money he made by torturing and exploiting the poor and the weak.

Guru Nanak, himself, did not believe in miracles though. He has said in the scriptures: Please listen to the truth that I speak. Except the true Name, I have no miracle.

Date of Pubn. : 31.1.2019 Posted at - NIE-H.O. Postal Date : 2-3 Feb. 2019
RNI Reg. No. DELBIL/2007/22062 Postal Regd. No. DL(W) 10/2143/2017-2019

ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व।
विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः।
या इमा विश्वा। विश्वकर्मा। यो नः पिता।
अन्नपतेऽन्नस्य नो देहि।। (यजु.-34-58)

ऋषिः- गृत्समद, देवता-ब्रह्मणस्पतिः, छन्दः- निचृत् त्रिष्टुप्

हे जगत के मालिक, आप सारे संसार के नियंत्रक हो। आप हमारी भी प्रार्थना सुने। ना केवल हमें परंतु हमारी संतानों को भी विद्या युक्त कीजिए। विद्या ही हमारी सुरक्षा करेगी। हमें ऊर्जा, खाद्य पदार्थ और समृद्धि मिलने का आशीर्वाद दें।

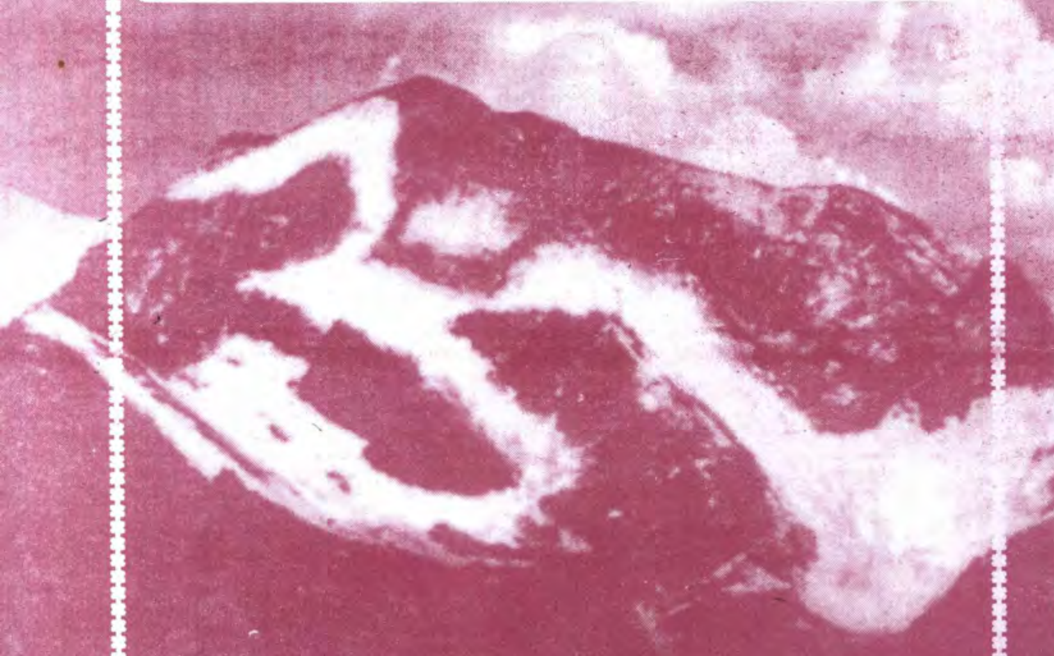

O lord of universe, you are the controller of the world. You listen to our prayers. Bless us knowledge, not to us only but to our progeny as well. Knowledge is our protection. Bless us with energy and food, protect and promote us. (Yajurved 34-58)

Printed by - Friendsprintofast, New Delhi-58